षट्तिला एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Shattila Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 42, controlling revision 336423. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 42 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 42 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda opening 1–2 and restarted 6.42.1–52, Sanskrit Wikisource revision 336423, not a transcription of the original text.

प्रश्न और संवाद की भूमिका

KATHA 6.42.1–6

युधिष्ठिर जगन्नाथ, आदिदेव कृष्ण से कृपा माँगकर माघ कृष्ण एकादशी का नाम और विधि पूछते हैं। चुने संस्कृत में उनके दो प्रारम्भिक पद 1–2 हैं, फिर भगवान के उत्तर से संख्या फिर 1 होती और 52 तक चलती है। दोनों प्रारम्भिक पद सहित कुल 54 क्रमांकित इकाइयाँ हैं; अंग्रेज़ी तुलना लगातार 1–54 गिनती है। यहाँ आगे के स्रोत-संदर्भ संस्कृत के पुनः आरम्भ हुए क्रम पर हैं; कोई पद गायब मानकर नहीं जोड़ा गया।

कृष्ण इसे षट्तिला और पाप-नाशक कहते हैं तथा पुलस्त्य द्वारा दालभ्य को कही कथा सुनाते हैं। दालभ्य पूछते हैं कि ब्रह्महत्या, परधन लेने और परव्यसन में मोहित होने जैसे कर्मों वाले लोग नरक से कैसे बचें और थोड़े दान से पाप कैसे शांत हो। पुलस्त्य प्रश्न की प्रशंसा करते हैं और विष्णु, ब्रह्मा तथा इन्द्र द्वारा पहले न बताई गई दुर्लभ गोपनीय बात कहने का आश्वासन देते हैं। यह धार्मिक संवाद है, अपराध की जिम्मेदारी या वास्तविक हानि का सुधार हटाने वाला उपाय नहीं।

Yudhishthira seeks the favour of Jagannatha, primordial Krishna, and asks the name and method of Magha's dark Ekadashi. In the selected Sanskrit his two opening units are 1–2, then the Lord's answer restarts at 1 and continues through 52. Including the opening there are 54 numbered units; the English comparison numbers continuously 1–54. The following locators use the restarted Sanskrit sequence; no supposedly missing verse is invented.

Krishna names Shattila and praises removal of sin, recounting what Pulastya told Dalabhya. Dalabhya asks how people involved in Brahmahatya, taking others' wealth and destructive preoccupations avoid hell, and how a small gift can quiet sin. Pulastya praises the question and promises rare, confidential teaching previously untold by Vishnu, Brahma and Indra. This is religious dialogue, not a way to remove accountability or repair for actual harm.

पूर्ण षट्तिल चर्चा और सीमाएँ

KATHA 6.42.7–22

पुलस्त्य माघ में स्नान, इन्द्रिय-संयम और काम, क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या, लोभ तथा चुगली छोड़ने का वर्णन करते हैं। भगवान-स्मरण और चरण धोने के बाद गोमय, तिल और कपास से 108 पिण्डिकाएँ बनाने का ऐतिहासिक प्रसंग आता है। चुना संस्कृत भूमि पर न गिरा गोमय कहता है; अंग्रेज़ी तुलना गिरा हुआ कहती

है। आषाढ़-नक्षत्र या मूल का पद आता है, जबकि अंग्रेज़ी मूल को कृष्ण पक्ष का आरम्भ पढ़ती है। इन पदों से आज का नक्षत्र, मुहूर्त या निर्माण-विधि नहीं निकाली गई।

पूजा, स्नान, शुद्धता, कृष्ण के नाम, रात्रि-जागरण और आरम्भिक होम के बाद दूसरे दिन फिर हरि-पूजा है। चन्दन, अगुरु, कपूर, नैवेद्य और कृसर का उल्लेख है। कूष्माण्ड, नारिकेल, बीजपूरक या इनके न होने पर पूगफल के साथ जनार्दन को अर्घ्य कहा जाता है। ये स्रोत-पद हैं, घर में आग, धुआँ, गोमय-प्रयोग, औषधि या खरीद की सलाह नहीं।

प्रार्थना का आशय है: कृपालु कृष्ण निराश्रितों का आश्रय हों, संसार-सागर में डूबे लोगों पर कृपा करें; कमलनयन, विश्वभावन और सुब्रह्मण्य जैसे संबोधनों सहित लक्ष्मी के साथ अर्पण स्वीकारें। इसे अलग अनिवार्य मंत्र नहीं बनाया गया। फिर विप्र का सम्मान, जलकुम्भ, छाता, पादुका, वस्त्र, कृष्ण-प्रसन्नता की कामना, सामर्थ्य अनुसार कृष्णा धेनु और तिलपात्र का दान आता है। संस्कृत विप्र-पूजा और जलकुम्भ को अंग्रेज़ी के देवता को मिट्टी का घड़ा देने में नहीं बदला गया।

काले तिल स्नान और भोजन में प्रशस्त कहे जाते हैं; सामर्थ्य अनुसार दान और खेत में उगे तिलों की संख्या के हजार वर्षों-समान स्वर्गफल की प्रशंसा है। छह प्रयोग स्पष्ट हैं: तिल-स्नान, तिल से उबटन, तिल-होम, तिल-जल, तिलदान और तिल खाना। यह सूची सार्वभौम चेकलिस्ट नहीं। नारद नाम के वक्ता कृष्ण को प्रणाम कर फल और उदाहरण पूछते हैं; आगे राजा, नारद और द्विज संबोधनों का मिश्रण मूल में है, उसे चुपचाप युधिष्ठिर नहीं किया गया। उपवास, जागरण, पशुदान और खरीद अनिवार्य नहीं; भोजन, पानी, विश्राम और देखभाल जारी रहें।

Pulastya describes bathing in Magha, restraint and abandoning desire, anger, pride, envy, greed and malicious talk. Remembering the Lord and washing the feet lead to a historical discussion of 108 pellets involving gomaya, sesame and cotton. The selected Sanskrit says gomaya not fallen on the ground; the English comparison says fallen. Ashadha-nakshatra or Mula appears, whereas English reads Mula as the dark fortnight's beginning. No present-day nakshatra, auspicious time or assembly procedure is derived.

Worship, bathing, purity, Krishna's names, night vigil and initial homa precede renewed Hari worship on the second day. Sandal, aguru, camphor, food offering and krisara are mentioned. Arghya to Janardana involves kushmanda, narikela, bijapuraka or, lacking these, puga-phala. These are source terms, not advice for household fire, smoke, gomaya handling, medicine or purchases.

The prayer asks compassionate Krishna to shelter those without refuge and favour people immersed in worldly existence; addresses including lotus-eyed one, Vishvabhavana and Subrahmanya accompany acceptance with Lakshmi. It is not extracted as a compulsory formula. Respect for a vipra, water-pot, umbrella, footwear, cloth, wishing Krishna's pleasure, a dark cow and sesame vessel according to means follow. Sanskrit vipra worship and water-pot are not replaced with the English deity/earthen-pitcher rendering.

Black sesame is praised for bathing and food; giving within means and thousands of heavenly years corresponding to sesame grown in a field are praised. Six uses are explicit: sesame bathing, rubbing, homa, sesame water, giving and eating. They are not a universal checklist. A speaker named Narada salutes Krishna

and asks for reward and an example; the source then mixes king, Narada and dvija addresses, not silently repaired to Yudhishthira. Fasting, vigils, animal gifts and purchases are optional; food, water, rest and care continue.

तपस्विनी, मिट्टी और अन्नविहीन घर

KATHA 6.42.23–37

कृष्ण कहते हैं कि वे देखा हुआ वृत्तांत सुनाते हैं। एक ब्राह्मणी निरन्तर व्रत और देव-पूजा करती, मासोपवास तथा कृष्ण-भक्ति में लगी रहती है। उपवासों से शरीर कष्ट पाता है। वह देव, ब्राह्मण और कुमारियों की भक्ति से घर आदि देती और कठिन तप करती है, पर भिक्षुक को भिक्षा और ब्राह्मणों को अन्न-संतोष नहीं देती। ये कथानक के भेद हैं, संपत्ति या भोजन देने की सार्वभौम मांग नहीं।

भगवान विचार करते हैं कि व्रत से उसका शरीर शुद्ध और वैष्णव लोक सम्मानित हुआ, पर तृप्ति देने वाला अन्नदान नहीं हुआ। वे कापाल रूप में मृत्युलोक आते और भिक्षा माँगते हैं। कापाल नाम रखा गया है; अंग्रेज़ी टिप्पणी का संप्रदाय-विस्तार या खोपड़ी-प्रयोग का निर्देश नहीं जोड़ा गया। स्त्री पूछती है कि क्यों आए और कहाँ जाएँगे। दोबारा भिक्षा माँगने पर क्रोध से ताँबे के पात्र में मिट्टी का पिण्ड डालती है। भगवान स्वर्ग लौटते हैं।

बहुत समय बाद व्रत के प्रभाव से वह सशरीर स्वर्ग आती है। मिट्टी देने से सुंदर घर मिलता है, लेकिन उसमें अन्न के ढेर नहीं हैं। कुछ न देखकर वह भगवान के पास जाकर क्रोध से पूछती है: इतने व्रत, कठिन तप, उपवास और जगतपालक की पूजा के बाद घर में कुछ क्यों नहीं? कथा भूख और तृप्ति का धार्मिक प्रश्न कहती है; वास्तविक गरीबी या अभाव व्यक्ति की कंजूसी, पाप या अपर्याप्त पूजा का प्रमाण नहीं। कठिन तप या भूखा रहना अपनाने को नहीं कहा जाता।

Krishna says he recounts what he witnessed. A Brahmin woman continually observes vows and worship, undertaking monthly fasting and Krishna devotion. Fasts distress her body. She gives houses and other things in devotion to gods, Brahmins and maidens and undertakes severe austerity, yet does not give alms to a beggar or satisfy Brahmins with food. These are narrative distinctions, not universal demands for property or food.

The Lord reflects that vows purified her body and honoured the Vaishnava world, but she did not offer food bringing satisfaction. He enters the mortal world in Kapala form, seeking alms. The name remains without importing the English footnote's sectarian expansion or any skull-handling instruction. She asks why he came and where he will go. At his renewed request she angrily puts a lump of earth in the copper vessel. The Lord returns to heaven.

After much time, the vow's efficacy brings her bodily to heaven. Giving earth brings a beautiful house, but it has no grain heaps. Finding nothing, she angrily asks the Lord why, after vows, severe austerity, fasting and worship of the world's protector, her home is empty. This is a religious narrative about hunger and satisfaction; actual poverty or deprivation does not prove stinginess, sin or inadequate worship. Severe austerity or hunger is not prescribed.

देवपत्नियों का आगमन और कथा का फल

KATHA 6.42.38–48

भगवान उसे घर लौटने और विस्मय से देखने आने वाली देवपत्नियों की प्रतीक्षा कहते हैं। षट्तिला का पुण्य-वृत्तांत सुनाए बिना द्वार न खोलने को कहते हैं। स्त्री लौटती है; देवपत्नियाँ आती और देखने के लिए द्वार खोलने को कहती हैं। वह सत्य रूप से षट्तिला का पुण्य-व्रत बताने की शर्त रखती है।

पहले कोई नहीं बताती, फिर अन्य द्वारा कथन का पद आता है। चुने संस्कृत में यह संक्षिप्त है; अंग्रेज़ी का अतिरिक्त अलग स्त्री द्वारा देखने की इच्छा वाला संवाद यहाँ नया नहीं बनाया गया। द्वार खुलने पर वे उस मानुषी को देखती हैं। देवी, गन्धर्वी, असुरी या पन्नगी जैसे रूपों में पहले ऐसी स्त्री न देखने का विस्मय आता है; यह नया रूपांतरण या आधुनिक सौंदर्य-मापदंड नहीं।

देवियों के उपदेश से सत्यव्रता षट्तिला का व्रत करती है। भोग और मुक्ति की प्रशंसा सहित तुरंत रूप-कांति, धन, धान्य, वस्त्र, सोना और चाँदी मिलता और घर संपन्न होता है। कांति का कथन अंत में फिर आता है; दोहरा स्रोत-कथन मिटाकर नया घटनाक्रम नहीं बनाया गया। यह धार्मिक फल है, सौंदर्य, धन या भूख मिटने की गारंटी नहीं; वास्तविक जरूरतों में व्यावहारिक सहायता और भोजन महत्त्वपूर्ण रहते हैं।

The Lord tells her to return home and await gods' wives coming in wonder to see her. She should not open without hearing Shattila's meritorious account. She returns; the visitors ask to enter and see her. She requires a truthful account of Shattila's meritorious vow.

Initially none tells it, then another's telling appears. The selected Sanskrit is compact; the English comparison's extra separate woman's wish-to-see dialogue is not invented here. When the door opens they see the human woman. Wonder at never seeing such a woman among goddesses, gandharvis, asuris or pannagis appears; this is not a newly invented transformation or modern beauty standard.

Following the goddesses' advice, the faithful woman observes Shattila. Praise of enjoyment and liberation accompanies immediate radiance, wealth, grain, cloth, gold and silver, and a prosperous home. Radiance is stated again at the end; the repetition is not erased to invent a new sequence. This religious reward does not guarantee beauty, wealth or ending hunger; practical help and food remain important in actual need.

दान की सीमा और पूरा समापन

KATHA 6.42.49–52

समापन अधिक तृष्णा और धन में छल छोड़ने तथा अपने साधन के अनुसार तिल और वस्त्र देने को कहता है। जन्म-जन्म में स्वास्थ्य, गरीबी, कष्ट और दुर्भाग्य न होने की धार्मिक प्रशंसा है। इस प्रकार तिलदान और योग्य पात्र को दान से बिना कठिनाई पाप-मुक्ति तथा शरीर में अनर्थ या श्रम न होने का कथन आता है। इसे वास्तविक बीमारी या गरीबी का दोष, दान से निश्चित सुरक्षा या चिकित्सा नहीं माना जाता; किसी की क्षमता से बाहर देना आवश्यक नहीं।

अलग समापन अध्याय 42 को उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में माघ कृष्ण षट्तिला एकादशी कहता है। कृष्ण–युधिष्ठिर आरम्भ, पुलस्त्य–दालभ्य और नारद-संबंधी कथन सभी रखे हैं। प्रारम्भ के अलग दो क्रमांकित पद, पुनः शुरू 1–52 का पूरा क्रम, बीच के बिना अलग संख्या वाले संवाद-अंश और समापन इस मौलिक संक्षिप्त गद्य में पूरे हैं। यह 54 क्रमांकित इकाइयों का पुनर्कथन है, संस्कृत प्रतिलेख या सभी लोकप्रिय रूपों का मिश्रण नहीं।

छह तिल-प्रयोग धार्मिक स्रोत की चर्चा हैं, हर घर के लिए अनिवार्य विधि नहीं। भूखा रहना, नींद छोड़ना, होम, गोमय छूना, पशुदान या खरीद आवश्यक नहीं। भोजन, पानी, विश्राम, देखभाल और जरूरतमंदों की व्यावहारिक सहायता जारी रखें। उत्सव की तिथि जुड़े पृष्ठ पर है; यहाँ नई तिथि या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

The close advises abandoning excessive craving and financial deceit and giving sesame and cloth according to one's resources. It religiously praises health across births and freedom from poverty, distress and misfortune. Sesame giving and gifts to a suitable recipient are said to remove sin without difficulty, bodily adversity or exertion. This does not assign blame for actual illness or poverty, guarantee protection through gifts or constitute treatment; giving beyond one's means is unnecessary.

The separate colophon identifies chapter 42 as Magha's dark Shattila Ekadashi within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue. Krishna–Yudhishthira's opening, Pulastya–Dalabhya and Narada-related statements all remain. The separately numbered two opening units, complete restarted 1–52 sequence, intervening unnumbered dialogue bridges and colophon are covered in this condensed original prose. It retells 54 numbered units, not a Sanskrit transcription or blend of every popular form.

The six sesame uses are religious source discussion, not compulsory household procedure. Hunger, loss of sleep and unsafe homa or gomaya handling are not recommended; animal gifts and purchases are not required. Food, water, rest, care and practical help for people in need continue. The linked hub owns the festival date; no new date or clock time is derived here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Shattila Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana opening 1–2 and restarted 6.42.1–52, revision 336423, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.